

रविवार 21 जुलाई, 2024

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठ: रोमियो 13: 11

"इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।"

उत्तरदायी अध्ययन: इफिसियों 6: 10-16

- ¹⁰ निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।
- ¹¹ परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको।
- ¹² क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।
- ¹³ इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।
- ¹⁴ सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मीकता की झिलम पहिन कर।
- ¹⁵ और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर।
- ¹⁶ और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. अय्यूब 33: 4

- ⁴ मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।

2. भजन संहिता 16: 5-11

- ⁵ यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है; मेरे बाट को तू स्थिर रखता है।
- ⁶ मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है॥

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 7 मैं यहोवा को धन्य कहता हूँ, क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है; वरन मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है।
- 8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा॥
- 9 इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी आत्मा मगन हुई; मेरा शरीर भी चैन से रहेगा।
- 10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा॥
- 11 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है॥

3. भजन संहिता 23: 6

- 6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥

4. 1 राजा 17: 1, 2, 9-15, 17-20 (से 1st.), 21 (हे भगवान), 22

- 1 और तिशबी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियों में से था उसने अहाब से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो में बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।
- 2 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
- 3 कि यहां से चलकर पूरब ओर मुख करके करीत नाम नाले में जो यरदन के साम्हने है छिप जा।
- 4 उसी नाले का पानी तू पिया कर, और मैं ने कौवों को आज्ञा दी है कि वे तूझे वहां खिलाएं।
- 5 यहोवा का यह वचन मान कर वह यरदन के साम्हने के करीत नाम नाले में जा कर छिपा रहा।
- 6 और सवेरे और सांझ को कौवे उसके पास रोटी और मांस लाया करते थे और वह नाले का पानी पिया करता था।
- 8 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
- 9 कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जा कर वहीं रह: सुन, मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है।
- 10 सो वह वहां से चल दिया, और सारपत को गया; नगर के फाटक के पास पहुंच कर उसने क्या देखा कि, एक विधवा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उसने कहा, किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ।
- 11 जब वह लेने जा रही थी, तो उसने उसे पुकार के कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ।
- 12 उसने कहा, तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए जाती हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं, और हम उसे खाएं, फिर मर जाएं।

- 13 एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर; जा कर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु पहिले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना।
- 14 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।
- 15 तब वह चली गई, और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे।
- 17 इन बातों के बाद उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी थी, रोगी हुआ, और उसका रोग यहां तक बढ़ा कि उसका सांस लेना बन्द हो गया।
- 18 तब वह एलिय्याह से कहने लगी, हे परमेश्वर के जन! मेरा तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिये मेरे यहां आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो और मेरे पाप का स्मरण दिलाए?
- 19 उसने उस से कहा अपना बेटा मुझे दे; तब वह उसे उसकी गोद से ले कर उस अटारी पर ले गया जहां वह स्वयं रहता था, और अपनी खाट पर लिटा दिया।
- 20 तब उसने यहोवा को पुकार कर कहा।
- 21 हे मेरे परमेश्वर यहोवा! इस बालक का प्राण इस में फिर डाल दे।
- 22 एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण उस में फिर आ गया और वह जी उठा।
- 23 तब एलिय्याह बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले गया, और एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता के हाथ में सौंप दिया, कि देख तेरा बेटा जीवित है।
- 24 स्त्री ने एलिय्याह से कहा, अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है, वह सच होता है।

5. अय्यूब 11: 14-19 (सं;)

- 14 और जो कोई अनर्थ काम तुझ से होता हो उसे दूर करे, और अपने डेरों में कोई कुटिलता न रहने दे,
- 15 तब तो तू निश्चय अपना मुंह निष्कलंक दिखा सकेगा; और तू स्थिर हो कर कभी न डरेगा।
- 16 तब तू अपना दुःख भूल जाएगा, तू उसे उस पानी के समान स्मरण करेगा जो बह गया हो।
- 17 और तेरा जीवन दोपहर से भी अधिक प्रकाशमान होगा; और चाहे अन्धेरा भी हो तौभी वह भोर सा हो जाएगा।
- 18 और तुझे आशा होगी, इस कारण तू निर्भय रहेगा; और अपने चारों ओर देख देखकर तू निर्भय विश्राम कर सकेगा।
- 19 और जब तू लेटेगा, तब कोई तुझे डराएगा नहीं।

6. यशायाह 38: 1-5, 9, 12 (सं 1st :), 16, 18 (सं:), 19 (सं:)

- 1 उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने पर था। और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उसके पास जा कर कहा, यहोवा यों कहता है, अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा।
- 2 तब हिजकिय्याह ने भीत की ओर मुंह फेर कर यहोवा से प्रार्थना कर के कहा;
- 3 हे यहोवा, मैं बिनती करता हूं, स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलता आया हूं और जो तेरी दृष्टि में उचित था वही करता आया हूं। और हिजकिय्याह बिलक बिलककर रोने लगा।
- 4 तब यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुंचा,
- 5 जा कर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; सुन, मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा।
- 9 यहूदा के राजा हिजकिय्याह का लेख जो उसने लिखा जब वह रोगी हो कर चंगा हो गया था, वह यह है:
- 12 मेरा घर चरवाहे के तम्बू की नाई उठा लिया गया है; मैं ने जोलाहे की नाई अपने जीवन को लपेट दिया है; वह मुझे तांत से काट लेगा; एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालेगा।
- 16 हे प्रभु, इन्हीं बातों से लोग जीवित हैं, और इन सभों से मेरी आत्मा को जीवन मिलता है। तू मुझे चंगा कर और मुझे जीवित रख!
- 18 क्योंकि अधोलोक तेरा धन्यवाद नहीं कर सकता, न मृत्यु तेरी स्तुति कर सकती है; जो कबर में पड़ें वे तेरी सच्चाई की आशा नहीं रख सकते
- 19 जीवित, हाँ जीवित ही तेरा धन्यवाद करता है, जैसा मैं आज कर रहा हूं; पिता तेरी सच्चाई का समाचार पुत्रों को देता है॥

7. मत्ती 4: 23

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

8. मत्ती 5: 1, 2

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

9. यूहन्ना 8: 12 (मैं हूँ)

- 12 जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।

10. 1 थिस्सलुनीकियों 3: 8

⁸ क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 394: 28-29

हमें याद रखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है, और यह कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है।

2. 289: 2-6

नश्वर मनुष्य कभी भी त्रुटि, पाप, बीमारी, और मृत्यु में विश्वास की लौकिक दुर्बलता से नहीं उठ सकता, जब तक कि वह यह न जान ले कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है। यह विश्वास कि जीवन और संवेदना शरीर में हैं, मनुष्य को ईश्वर की छवि के रूप में समझने की समझ से दूर होना चाहिए।

3. 492: 7-11

पवित्र होना, समरसता, अमरता है। यह पहले से ही साबित हो गया है कि इस का ज्ञान, यहां तक कि छोटी सी डिग्री में, नश्वर लोगों के भौतिक और नैतिक स्तर को ऊपर उठाएगा, दीर्घायु को बढ़ाएगा, चरित्र को शुद्ध और ऊंचा करेगा।

4. 245: 32 (वह)-6

अनंत न कभी शुरू हुआ और न कभी खत्म होगा। मन और उसके स्वरूपों का सत्यानाश कभी नहीं हो सकता। मनुष्य एक पेंडुलम नहीं है, जो बुराई और भलाई, खुशी और दुःख, बीमारी और स्वास्थ्य, जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा है। जीवन और उसके संकायों को कैलेंडरों द्वारा मापा नहीं जाता है। सही और अमर उनके निर्माता की शाश्वत समानता है।

5. 246: 10-31

सौर वर्षों से जीवन का माप युवाओं को लूटता है और उम्र के लिए कुरूपता देता है। पुण्य का उज्ज्वल सूर्य और होने के साथ सत्य सह-अस्तित्व। घटता हुआ सूरज उसकी शाश्वत दोपहर है, जो एक गिरते सूरज से अनिच्छुक है। भौतिक और भौतिक के रूप में, सौंदर्य की क्षणिक भावना फीकी पड़ जाती है, आत्मा की चमक उज्ज्वल और अपूर्ण चमक के साथ उत्कीर्ण भावना पर भोर होनी चाहिए।

उम्र पर कभी ध्यान न दें। कालानुक्रमिक डेटा हमेशा के लिए विशाल का हिस्सा नहीं हैं। जन्म और मृत्यु के समय-सारणी मर्दानगी और नारीत्व के खिलाफ बहुत सारे षड्यंत्र हैं। उस अच्छे और सुंदर सभी को मापने और सीमित करने की त्रुटि को छोड़कर, आदमी श्रीस्कोर वर्ष और दस से अधिक का आनंद ले सकता है और अभी भी अपनी ताकत, ताजगी और वादे को बनाए रखेगा। अमर मन द्वारा शासित मनुष्य हमेशा सुंदर और भव्य होता है। प्रत्येक सफल वर्ष ज्ञान, सौंदर्य और पवित्रता को प्रकट करता है।

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

6. 247: 10-11 अगला पृष्ठ

सौंदर्य, साथ ही सत्य, शाश्वत है; लेकिन भौतिक चीजों की सुंदरता नश्वर विश्वास के रूप में दूर, लुप्त होती और क्षणभंगुर हो जाती है। कस्टम, शिक्षा और फैशन नश्वर लोगों के क्षणिक मानकों का निर्माण करते हैं। अमरता, उम्र या क्षय से मुक्त, अपनी खुद की एक महिमा है, - आत्मा की चमक। अमर पुरुष और महिला आध्यात्मिक भावना के उदाहरण हैं, पूर्ण मन से खींचे गए और प्रेम के उन उच्च अवधारणाओं को दर्शाते हैं जो अपनी भौतिक भावना को पार करते हैं।

सौम्यता और अनुग्रह पदार्थ से स्वतंत्र हैं। मानवीय रूप से देखे जाने से पहले उसके गुण उसके पास होते हैं। सुंदरता जीवन की एक चीज है, जो शाश्वत मन में हमेशा के लिए रहती है और अभिव्यक्ति, रूप, रूपरेखा और रंग में उनकी अच्छाई के आकर्षण को दर्शाती है। यह प्रेम ही है जो पंखुड़ी को असंख्य रंगों से रंगता है, गर्म धूप की किरणों में झलकता है, सुंदरता के धनुष के साथ बादल को झुकाता है, रात को तारों से जगमगाता है, और पृथ्वी को सुंदरता से ढकता है।

व्यक्ति के अलंकरण अस्तित्व के आकर्षण के लिए घटिया विकल्प हैं, चमकते हुए देदीप्यमान और उम्र और क्षय के साथ शाश्वत हैं।

शरीर में दर्द या खुशी के विश्वास से पीछे हटने के लिए आध्यात्मिक सद्भाव की अपरिवर्तनीय शांत और गौरवशाली स्वतंत्रता में सुंदरता का नुस्खा कम भ्रम और अधिक आत्मा होना है।

प्यार कभी भी सुंदरता से नजर नहीं हटाता है। इसका प्रभामंडल इसकी वस्तु पर टिका है। किसी को ताज्जुब होता है कि दोस्त कभी भी कम खूबसूरत लग सकता है। परिपक्व वर्षों और बड़े पाठों के पुरुषों और महिलाओं को अंधेरे या निराशा में जाने के बजाय स्वास्थ्य और अमरता में परिपक्व होना चाहिए। अमर मन शरीर को अलौकिक ताजगी और निष्पक्षता के साथ खिलाता है, इसे विचारों की सुंदर छवियों के साथ आपूर्ति करता है और इंद्रियों के संकटों को नष्ट करता है जो प्रत्येक दिन निकट कब्र में लाता है।

7. 249: 18-20 (से 1st.)

जीवन, मसीह की तरह है, "वही कल, और आज, और हमेशा के लिए।" संगठन और समय का जीवन से कोई लेना-देना नहीं है।

8. 407: 21-24

यदि भ्रम कहता है, "मैंने अपनी याददाश्त खो दी है," तो इसका खंडन करें। मन का कोई संकाय नहीं खोया है। विज्ञान में, सभी अनन्त, आध्यात्मिक, परिपूर्ण, हर क्रिया में सामंजस्यपूर्ण हैं।

9. 486: 23-26

दृष्टि, श्रवण, मनुष्य की सभी आध्यात्मिक इन्द्रियाँ शाश्वत हैं। वे खो नहीं सकते। उनकी वास्तविकता और अमरता आत्मा और बुद्धि में है, पदार्थ में नहीं, - इसलिए उनका स्थायित्व है।

10. 487: 3 (जीवन अमर है.)-12

जीवन अमर है। जीवन मनुष्य का मूल और परम है, मृत्यु के द्वारा कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है, लेकिन उसके पहले और बाद में सत्य के मार्ग पर चलकर प्राप्त किया जाता है जिसे मृत्यु कहा जाता है। भौतिक रूप से आध्यात्मिक रूप से देखने और सुनने में अधिक ईसाइयत है। उनके नुकसान की तुलना में माइंड-संकायों के सतत अभ्यास में अधिक विज्ञान है। खोया वे नहीं हो सकता है, जबकि मन रहता है। इस की आशंका ने अंधे को दृष्टि दी और सदियों पहले बहरे को सुना, और यह आश्चर्य को दोहराएगा।

11. 283: 1-6

जैसे-जैसे मनुष्य आत्मा को समझने लगते हैं, वे यह विश्वास छोड़ देते हैं कि ईश्वर के अलावा कोई सच्चा अस्तित्व है।

मन सभी आंदोलन का स्रोत है, और इसकी स्थायी और सामंजस्यपूर्ण कार्रवाई की मंदता या जांच करने के लिए कोई जड़ता नहीं है।

12. 218: 27-2

धर्मग्रन्थ कहते हैं, "जो यहोवा की बाट जोहते हैं, ...वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे॥" थकान के क्षणों पर इसका शाब्दिक अर्थ लागू करने से इसका अर्थ विकृत नहीं होता, क्योंकि नैतिक और

शारीरिक परिणाम एक ही होते हैं। जब हम अस्तित्व के सत्य के प्रति जागते हैं, तो सभी रोग, दर्द, कमजोरी, थकावट, दुख, पाप, मृत्यु अज्ञात हो जाएंगे, और नश्वर स्वप्न हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा।

13. 249: 6-8

आइए हम आत्मा की दिव्य ऊर्जा को महसूस करें, हमें जीवन के नएपन में लाएं और किसी भी नश्वर और भौतिक शक्ति को नष्ट करने में सक्षम न होने को पहचानें।

14. 200: 9-15 (से 2nd.)

जीवन है, था, और हमेशा सामग्री से स्वतंत्र रहेगा; क्योंकि जीवन ईश्वर है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है, भौतिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से, और वह क्षय और धूल के अधीन नहीं है। भजनहार ने कहा: "तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।"

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी

सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6